B.Com-II   Money & Banking (S)   By, Sujeet Kr. Suman
R.N.C.
Hajipur

Q.No.1 केन्द्रीय बैंक क्या है? इसके कार्यों का वर्णन करें?

उत्तर

संसार के सभी महत्वपूर्ण देशों के केन्द्रीय बैंक मौद्रिक एवं वित्तीय प्रणाली की केन्द्रीय धुरी के समान है। केन्द्रीय बैंक देश का सर्वोच्च बैंक होता है, किसी भी देश में सरकार की आर्थिक क्रियाएं केन्द्रीय बैंक के माध्यम से ही संचालित होती हैं। भारत में इसे रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया इंग्लैण्ड में बैंक ऑफ इंग्लैण्ड तथा फ्रांस में बैंक ऑफ फ्रांस के नाम से जाना जाता है।

संसार का पहला केन्द्रीय बैंक 1656 ई० में स्वीडन में रिक्स बैंक के नाम से स्थापित हुआ। इसके बाद 1664 ई० में बैंक ऑफ इंग्लैण्ड की स्थापना हुई। इसे ही केन्द्रीय बैंकों की जननी कहा जाता है। 1800 ई० में बैंक ऑफ फ्रांस, 1814 में बैंक ऑफ नीदरलैण्ड, 1856 में बैंक ऑफ स्पेन, 1869 में बैंक ऑफ रसिया तथा 1875 में रीश बैंक ऑफ जर्मनी की स्थापना हुई। 1900 के बाद अन्य देशों में भी तेजी से केन्द्रीय बैंक स्थापित हुए। भारत में हिल्टन यंग कमीशन की सिफारिश पर सन् 1935 में केन्द्रीय बैंक के रूप में रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना हुई।

प्रो० हाट्रे के अनुसार -" केन्द्रीय बैंक 'बैंकों का बैंक है', क्योंकि यह अन्य बैंको के लिए अन्तिम ऋणदाता का कार्य करता है।"

प्रो० क्राउथर के अनुसार-" केन्द्रीय बैंक अन्य बैंको के लिए वही स्थिति रखता है जो कि स्वयं बैंकों की जनता के प्रति होती है।"

* केन्द्रीय बैंक के कार्य:-

(1) नोट निर्गमन का एकाधिकार → संसार के सभी देशों में केन्द्रीय बैंक को नोट निकालने का एकाधिकार दिया गया है। नोट निकालने का काम अकेले केन्द्रीय बैंक को देने के निम्नलिखित लाभ हैं:-

Scanned with CamScanner

(i) देश में एक ही प्रकार की मुद्रा चलन में रहती है।
(ii) मुद्रा का चलन देश की आवश्यकता के अनुसार होता है, क्योंकि केन्द्रीय बैंक का उद्देश्य लाभ कमाना नहीं होता।
(iii) मुद्रा एवं साख नीति पर सरकारी नियंत्रण में सफलता रहती है।
(iv) नोटों से पूरा प्राप्त लाभ सरकार को मिल जाता है।
(v) केन्द्रीय बैंक द्वारा सरकारी नीति का पालन करने में सुविधा रहती है।
(vi) केन्द्रीय बैंक को नोटों की निकासी का एकाधिकार दिये जाने से जनता का नोटों में स्थायी विश्वास बना रहता है।

(2.) बैंकों का बैंक → केन्द्रीय बैंक को 'बैंकों का बैंक' कहा जाता है, क्योंकि वह व्यापारिक बैंकों की रकम जमा रखता है और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें ऋण देता है। केन्द्रीय बैंक व्यापारिक बैंकों द्वारा प्रस्तुत किये गये बिलों की पुनर्कटौती भी करता है।

व्यापारिक बैंक केन्द्रीय बैंक के पास इस कारण भी रकम जमा रखना चाहते हैं कि वह उनके आपसी लेन-देन का निपटारा सरलता से कर सके। कुछ देशों में व्यापारिक बैंकों द्वारा केन्द्रीय बैंक के पास नकद जमा रखना अनिवार्य कर दिया गया है।

(3.) सरकार का बैंकर, एजेण्ट तथा सलाहकार →

(i) सरकार का बैंकर → सरकार के बैंकर के रूप में केन्द्रीय बैंक, केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों की राशि अपने पास जमा करते हैं और सरकार की ओर से भुगतान करते हैं, किन्तु केन्द्रीय बैंक सरकार की जमा राशि पर कोई ब्याज नहीं देता।

(ii) सरकार के प्रतिनिधि के रूप में → केन्द्रीय बैंक सरकार का वित्तीय एजेन्ट भी होता है। सरकार जिन देशों से भी आर्थिक लेन-देन के समझौते करती है, वे सब केन्द्रीय बैंक के माध्यम से किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा सम्मेलनों में केन्द्रीय बैंक के विशेषज्ञ सरकार के प्रतिनिधि का कार्य करते हैं।

(iii) सरकार के आर्थिक सलाहकार के रूप में → केन्द्रीय बैंक सरकार की व्यापारिक, औद्योगिक तथा कर नीतियों में सलाहकार का काम करता है। केन्द्रीय बैंक में प्रायः सभी विशेषज्ञ होते हैं, जिनकी सलाह से सरकार उचित आर्थिक नीतियाँ निर्धारित कर सकती है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(4) विदेशी विनिमय कोषों का संरक्षक → केन्द्रीय बैंक में व्यापारिक बैंकों द्वारा नकद कोष रखने जाने का मुख्य लाभ यह होता है कि बैंकिंग प्रणाली को संयुक्त आधार मिल जाता है, साथ ही साथ साख का लोचपूर्ण निर्माण भी किया जा सकता है। इससे समाशोधन कार्य में सरलता होती है,

केन्द्रीय बैंक विदेशी विनिमय कोषों के संरक्षक के रूप में कार्य करता है, तदनुसार देश को विदेशी व्यापार, विदेशी ऋण और अनुदानों से जितनी विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है, केन्द्रीय बैंक उसके श्रेष्ठतम प्रयोग के लिए प्रयत्नशील रहता है।

(5) व्यापारिक बैंक के लिए अन्तिम ऋणदाता → व्यापारिक बैंकों को कभी-कभी अतिरिक्त धन की आवश्यकता होती है, जिसे वे अपने साधनों से पूरा नहीं कर पाते। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए वे साथी बैंक से भी ऋण का प्रयत्न करते हैं। इतने पर भी जब उनकी आवश्यकता पूरी नहीं होती तो वे केन्द्रीय बैंक से ऋण लेते हैं। इस कारण से केन्द्रीय बैंक अन्तिम ऋणदाता कहलाता है, क्योंकि जब अन्य किसी साधन से उधार मिलने की आशा नहीं रहती है तब केन्द्रीय बैंक से रकम मिल जाती है।

(6) समाशोधन एवं स्थानान्तरण सुविधा → केन्द्रीय बैंक के पास व्यापारिक बैंकों के खाते होते हैं। अतः वह सब बैंकों के आपसी लेन-देन का निपटारा सरलता से कर सकता है। बैंकों के पास एक-दूसरे के चेक आते हैं। यह चेक निश्चित स्थान पर ले जाये जाते हैं और प्रत्येक बैंक एक-दूसरे का लेना-देना निकाल देता है। इस प्रकार एक खाका ब्यौरा तैयार किया जाता है, केन्द्रीय बैंक द्वारा यह लेन-देन अलग-अलग बैंक के खाते में जमा या नाम कर दिया जाता है। इस प्रकार करोड़ों ₹ के लेने-देन का हिसाब केवल खातों में जमा या नाम लिखने मात्र से हो जाता है। केन्द्रीय बैंक द्वारा प्रायः सभी बड़े-बड़े नगरों में समाशोधन गृहों की स्थापना की जाती है जहाँ बैंकों के लेन-देन का समाशोधन होता रहता है।

—○—

Scanned with CamScanner